अनुवाद

जीवात्मा जिस प्रकार देह को त्याग कर जाता है और माया के आधीन जिस देह को भोगता है, मूर्ख यह नहीं जान सकते; परन्तु विवेकरूप नेत्र वाले ज्ञानी पुरुषों को इस सबका अनुभव होता है।।१०।।

तात्पर्य

इस श्लोक में आया **ज्ञानचक्षुषः** शब्द विशेष महत्त्वपूर्ण है। ज्ञान के बिना यह नहीं जाना जा सकता कि जीव किस प्रकार अपने वर्तमान शरीर को त्यागता है, पुनर्जन्म में किस योनि में जायगा और न ही यह कि वह किसी देह विशेष में क्यों है। यह सब तत्त्व जानने के लिए आवश्यक है कि प्रामाणिक गुरू के मुखारविन्द से भगवद्गीता आदि शास्त्रों का महान् ज्ञान प्राप्त किया जाय। जो इन सब तत्त्वों का अनुभव करने की शिक्षा पाता है, वह भाग्यवान् है। जीवमात्र किसी निश्चित परिस्थिति में देहत्याग करता है, देह में रहता है तथा माया के वशीभूत हुआ विषय भोगता है। विषयभोग के भ्रम में वह नाना प्रकार के सुख-दुःख पा रहा है। जिन मनुष्यों की बुद्धि को कामना और इच्छा ने सदा के लिए हर लिया है, वे यह समझने की सारी शक्ति खो बैठते हैं कि वे किस प्रकार देहान्तर कर रहे हैं और किस प्रकार देह में गुणों के आधीन सुख-दुःख भोगते हैं। उनकी समझ में यह सब नहीं आ सकता। इसके विपरीत, जो विवेकज्ञानरूप दृष्टि से युक्त हैं, वे अनुभव करते हैं कि आत्मा देह से भिन्न है और देहान्तर करता हुआ नाना प्रकार के विषयों को भोग रहा है। इस कोटि के ज्ञानी मनुष्य संसार में जीव को होने वाले दुःख का कारण जानते हैं। यही कारण है कि कृष्णभावना के उत्तम अधिकारी दुःखमय बद्धदशा से जनता को मुक्त करने के उद्देश्य से उसमें प्राणपण से यह ज्ञान प्रचारित करते हैं। सभी मनुष्यों को इस बन्धन से निकल कर कृष्णभावनाभावित हो जाना चाहिए, जिससे वैकुण्ठ-जगत् का मुक्ति-पथ प्रशस्त हो जाय।

यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम्।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः।।११।।

यतन्तः=साधन करते हुए; **योगिनः**=योगी; **च**=तथा; **एनम्**=इस आत्मा को; **पश्यन्ति**=देखते हैं; **आत्मनि**=शरीर में; **अवस्थितम्**=स्थित; **यतन्तः**=यत्न करते हुए; **अपि**=भी; **अकृतात्मानः**=अशुद्ध चित्त वाले; **न**=नहीं; **एनम्**=इस आत्मा को; **पश्यन्ति**=देखते; **अचेतसः**=अज्ञानी।

अनुवाद

आत्मज्ञानी योगी यत्न करते हुए इस तत्त्व को पूर्ण रूप से देखते हैं; परन्तु जो आत्मज्ञानी नहीं हैं, वे चेष्टा करने पर भी इसे नहीं देख सकते।।११।।

तात्पर्य

अनेक योगी स्वरूप-साक्षात्कार के पथ के पथिक हैं; परन्तु जो आत्मतत्त्व में